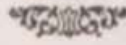


॥ श्रीः ॥

चौखम्बा सुरभारती ग्रन्थमाला

१६४



शिवोपदिष्टः

विज्ञानभैरवः

श्रीक्षेमराजाचार्यविरचितविवृतिभागोत्तरं

श्रीशिवोपाध्यायविरचितविवृत्युपेतः

कारिकानुवाद-विवृतिभागस्थहिन्दीव्याख्योपेतः

व्याख्याकार

श्रीबापूलाल 'आजना'

प्रवक्ता : संस्कृत विभाग

ज० ला० नेहरू स्मारक पोस्ट-ग्रेजुएट कालेज

महाराजगंज, गोरखपुर



चौखम्बा सुरभारती ग्रन्थमाला

वा रा न ती

विषयानुक्रमणिका

	कारिका	पृष्ठाङ्क
भैरव के स्वरूप के सम्बन्ध में प्रश्न	१-२	१
परमतत्त्व विषयक आठ प्रश्न	२-५	३
परादि शक्तित्रय विषयक प्रश्न	५-७	५
सकल स्वरूप की असारता	८-१३	८
निष्कल स्वरूप की परमार्थता	१४-१७	९
शिव-शक्ति के स्वरूप का निर्णय	१८-२१	१०
परावस्था की प्राप्ति का उपाय क्या है	२२-२३	१२
क्रमशः ११२ धारणाओं का उपदेश		
प्राणापान विषयक धारणा के षड्विध अर्थ	२४	१३
अष्टविध प्राणायाम	२५-३७	१७
भैरव-मुद्रा का विवेचन	२६	२१
शान्ता-नामा शक्ति से शान्त-स्वरूप की प्राप्ति	२७	२२
प्राणापान-वायु की सूक्ष्मता से भैरव-स्वरूप की अभिव्यक्ति	२८	२२
प्रतिचक्र में दौड़ती प्राणवायु का चिन्तन	२९	२३
अकारादि द्वादश स्वरों द्वारा द्वादश चक्रों का भेदन	३०	२३
खेचरी मुद्रा का साधन	३१	२४
इन्द्रिय-पंचक की शून्यता द्वारा अनुत्तरशून्य में प्रवेश	३२	२५
शून्यता में लीन प्राणशक्ति	३३	२५
कपालछिद्र में मन की एकाग्रता	३४	२७
चिदाकाशात्मिका देवी का सुषुम्ना नाड़ी द्वारा ध्यान	३५	२८
भ्रूचक्र के भेदन द्वारा बिन्दु में लीन होना	३६	२८
विकल्पों के विनाश हेतु बिन्दु का द्वादशान्त में ध्यान	३७	२९
नाद (शब्दब्रह्म) भावना	३८	२९
प्रणवपिण्डमन्त्र भावना		
प्रणव व प्लुतोच्चारण द्वारा शून्यभाव की धारणा	३९	३०
वर्ण के आदि-अन्त के चिन्तन द्वारा शून्य का साक्षात्कार	४०	३२
नाद-चिन्तन द्वारा परमाकाश की प्राप्ति	४१	३३
अर्द्धबिन्दु, बिन्दु, नाद व नादास्त के अनन्तर शून्योच्चारण	४२	३३

शून्य भावना

परमशून्य की धारणा द्वारा समग्र आकाश का प्रकाशन	४३	३७
शून्य के चिन्तन से मन की शून्यता	४४	३८
ऊर्ध्व मूल और मध्य शून्य के चिन्तन द्वारा		
निर्विकल्पता का उदय	४५	३८
शरीर में क्षणिक शून्यता के चिन्तन द्वारा भी		
तत्त्वों की निर्विकल्पता	४६	३९
देह के समस्त द्रव्यों की आकाश से व्याप्ति	४७	४०
शरीर की त्वचा की व्यर्थता	४८	४०
चित्त की एकाग्रता द्वारा मात्र चैतन्य की अनुभूति	४९	४०
द्वादशान्त में मन की लीनता तथा बुद्धि की स्थिरता	५०	४१
वृत्तियों की शीघ्रता द्वारा वैलक्षण्य की प्राप्ति	५१	४१
कालाग्नि से स्वशरीर को जलता हुआ मानना	५२	४१
सारे संसार को विकल्पों से जला हुआ मानना	५३	४२
संपूर्ण जगत् के तत्त्वों को स्व-स्व कारणों में लय हो		
जाने का ध्यान करना	५४	४२
हृदय-चक्र में प्राणशक्ति का ध्यान करना	५५	४२

षडध्व भावना

भुवनाध्वा के रूप में चिन्तन से मन का लय हो जाना	५६	४३
अध्व-प्रक्रिया से शिवतत्त्व का ध्यान करना	५७	४६
संसार को शून्यता में लीन करना	५८	४७
अंतःकरण में दृष्टि का स्थापन	५९	४७

मध्य भावना

दृष्टि-बन्धन भावना का निरूपण	६०	४८
निरालम्ब भावना का वर्णन	६१	४८
ध्येयाकार भावना	६२	४९
शाक्ती भूमिका-समग्र शरीर व जगत् को चिन्मय विचारना	६३	५०
अन्तर व बाह्य वायुओं का संघट्टन	६४	५०
सम्पूर्ण जगत् को आत्मानन्द से परिपूर्ण मानना	६५	५१
माधीव प्रयोग (कुहन प्रयोग) महानन्द की प्राप्ति	६६	५१

प्राणायाम-विवेचन

इन्द्रिय-छिद्रों के निरोध तथा प्राण-शक्ति के उत्थान से
'परमसुख'

६७ ५२

विषस्थान तथा वल्लिस्थान के मध्य में मन को स्थित
करने से परम शिव की प्राप्ति

६८ ५५

सुख भावना

स्त्री-संसर्ग के आनन्द से ब्रह्मतत्त्व की अनुभूति

६९ ५६

स्त्री जन्य पूर्वानुभूत सुखों के स्मरण द्वारा परमानन्द की
अनुभूति

७० ५७

धन एवं बन्धु-बान्धव के मिलने से उत्पन्न आनन्द का ध्यान

७१ ५८

भोजन और पान से उत्पन्न आनन्द का ध्यान

७२ ५८

संगीतादि विषयों के आस्वादन में तन्मयता

७३ ५९

मनोवाञ्छित संतोष की प्राप्ति के साधनों में मन की स्थिरता

७४ ६०

मनोगोचर अवस्था द्वारा परादेवी का प्रकाशन

(शांभवी भूमिका)

७५ ६२

सूर्य-दीपक आदि तेज से चित्रित आकाश में दृष्टि को स्थित
करना

७६ ६२

क्रमदर्शन की मुद्राएँ

करङ्किणी, क्रोधना, लेलिहाना, भैरवी और खेचरी आदि

मुद्राओं का विवेचन

७७ ६३

कटि-प्रदेश वाले आसन द्वारा ध्यान

७८ ६७

कक्षाकाश में मन को स्थिर करना

७९ ६७

स्थूलरूप विषय में दृष्टि को स्तब्ध कर मन को निराश्रित

बनाना (भैरवी भूमिका)

८० ६७

जिह्वा को मुँह के बीच में रखकर हकार का उच्चारण करना

८१ ६७

शयनासन लगाकर शरीर को निराधार समझना

८२ ६८

चंचल आसन पर बैठने पर भी मानस भाव को शांत रखना

८३ ६९

निर्मल आकाश में दृष्टि को स्तब्ध करना

८४ ६९

तिमिर भावना

भैरवत्व की भावना करना

८५ ६९

ज्ञान, प्रकाश तथा तम (जाग्रत्, स्वप्न व सुषुप्ति) को भैरव

रूप समझना

८६ ७०

तैमिरी धारणा का निरूपण	८७	७२
नेत्र निमीलित कर काले स्वरूप (अंधकार) का चिन्तन करना	८८	७३
इन्द्रिय निरोध मात्र से अद्वितीय शून्य में प्रवेश	८९	७३
अनुत्तर (अकार) तत्त्व का विवेचन		
विन्दु विसर्ग रहित मात्र अकार का जप	९०	७३
विसर्ग युक्त वर्ण का ध्यान कर चित्त को आधार रहित करना	९१	७७
अपनी आत्मा का आकाश सदृश चिन्तन	९२	७९
मूची-नोक द्वारा अङ्ग भेदन कर वहाँ चेतना का संयोग चित्तादि विकल्पों से मुक्ति	९४	८०
माया, कला, इच्छा प्रभृति का विवेचन		
विभिन्न तत्त्वों के विभिन्न धर्मों का आकलन	९५	८०
इच्छा के उत्पन्न होते ही उसका शमन	९६	८१
इच्छा, ज्ञान और क्रिया के सदृश स्वयं का अस्तित्व न होना	९७	८५
इच्छा अथवा ज्ञान को आत्मा समझना	९८	८५
आधार के बिना ज्ञान को भ्रमात्मक समझना	९९	८६
सारे शरीरों को चैतन्यधर्मा आत्मा समझना	१००	८७
कामादि आसक्तियों के समय बुद्धि को स्थिर करना	१०१	८८
सारे संसार को इन्द्रजालमय या चित्रकर्म के समान समझना	१०२	८८
सुख और दुःख के मध्य अवशिष्ट तत्त्व को पहचानना	१०३	८८
अहम्भाव (विश्वात्मता)		
‘मैं सर्वत्र विद्यमान हूँ’ इस भावना का ध्यान	१०४	८९
विषय-विज्ञान और इच्छादि को शून्य मानना	१०५	९१
ग्राह्य-ग्राहक रूप की सभी प्राणियों में सामान्य प्रतीति	१०६	९२
जाग्रदादि चार अवस्थाएँ तथा त्रिविध शरीर		
स्वशरीर सदृश परशरीर में भी संवित्ति का अनुभव	१०७	९४
मन को निराधार कर विकल्प-कल्पनों का त्याग	१०८	९६
प्रत्यभिज्ञा के द्विविध स्वरूप		

सर्वज्ञ, सर्वकर्ता, व्यापक और परमेश्वर की स्वयं में प्रतीति	१०९	९७
जल की तरंगों और सूर्य के प्रकाश में भैरव की ही		
भङ्गिमाओं का ध्यान	११०	९८
शरीर द्वारा विश्राम की स्थिति में निर्विकल्प अवस्था का		
उदय	१११	९९
अशक्ति आदि द्वारा पदार्थों में शक्ति के समावेश से क्षोभ		
को मिटाना	११२	९९
नेत्रों की स्तब्धता द्वारा कैवल्योत्पत्ति	११३	९९
सिद्धासन द्वारा अच् और हल् रहित अकार के उच्चारण		
से ब्रह्म में प्रवेश	११४	९९
कृपाकाश और महाकाश की एकता का अविकल्प		
बुद्धि द्वारा ध्यान	११५	१००

सप्तविध समाधि

बाह्य तथा आभ्यन्तर विषयों में सर्वत्र चैतन्य संविद्रूप		
का ध्यान	११६	१००
बाह्याभ्यन्तर इन्द्रियों द्वारा अभिव्यक्त पदार्थों में चैतन्य की		
अनुभूति (भरितावस्था)	११७	१०३
भय-शोक-क्षुधादि अवस्था में ब्रह्म सत्तामयी अवस्था का		
अनुभव (शाम्भवी भूमिका)	११८	१०४
देखे पदार्थों का स्मरण कर स्वशरीर को आधारहीन बनाना	११९	१०४
वस्तु से दृष्टि लौटाकर उसके ज्ञान को चित्त में लौटाना	१२०	१०५

भक्ति-विवेचन

शाङ्करी शक्ति का नित्य ध्यान	१२१	१०५
एक वस्तु का ध्यान करते हुए अन्य वस्तुओं में		
शून्यता का ध्यान	१२२	१०५

शुद्धि व अशुद्धि का स्वरूप

शुद्धि-अशुद्धि तथा शुचि-अशुचि का विचार नहीं करना	१२३	१०८
साधारण मनुष्यों में भैरव के अद्वैत का दर्शन	१२४	१११
शत्रु और मित्र तथा मान और अपमान में समदृष्टि		
द्वारा ब्रह्म की परिपूर्णता की अनुभूति	१२५	११२
रागद्वेष से मुक्त भावना की प्राप्ति	१२६	११३

शून्यता का विवेचन

अज्ञेय, अग्राह्य तथा अभाव रूपों में भैरव की भावना करना	१२७	११४
ब्रह्माकाश में मन की स्थिरता द्वारा आकाश से परे अशून्य में प्रवेश	१२८	११६
इच्छित वस्तुओं से मन का निरोध कर उसे निश्चल बनाना	१२९	११६

भैरव के स्वरूप का निरूपण

सर्वत्र व्यापक एवं सर्वशक्तिदाता भैरव शब्द का निरन्तर उच्चारण	१३०	११७
‘मैं’ और ‘मेरा’ इत्यादि बोधादि विकल्पों से रहित होना	१३१	१२०
नित्य, निराधार, व्यापक, सर्वेश्वर आदि शब्दों का प्रतिक्षण ध्यान	१३२	१२२
इन्द्रजाल धारणा का वर्णन	१३३	१२३

शून्य स्वरूप का वर्णन

१३४ १२३

बन्ध और मोक्ष की व्यवस्था

संसार को बुद्धि का प्रतिबिम्ब मानना	१३५	१२५
इन्द्रियों का त्याग कर आत्मनिष्ठ होना	१३६	१२७

जीवन्मुक्ति का विवेचन

ज्ञान और ज्ञेय का एकीकरण	१३७	१२८
मानस, चेतना, प्राणशक्ति और जीवात्मा के परिक्षीण होने पर भैरवावस्था की प्राप्ति	१३८	१३०
निस्तरंग उपदेशों द्वारा व्यक्ति का ज्ञानी हो जाना	१३९	१४०
११२ धारणाओं में से किसी एक द्वारा स्वयं भैरव हो जाना या शाप व अनुग्रह जैसी शक्तियों की प्राप्ति	१४०	१४१
जीवन्मुक्त अवस्था की प्राप्ति	१४१	१४१

जप, पूजा, होम आदि के विषय में देवी का प्रश्न

जप और जपकर्ता के सम्बन्ध में देवी का प्रश्न	१४२	१४१
ध्याता, पूजक, होम और याग के सम्बन्ध में प्रश्न	१४३	१४२
इन प्रश्नों का भैरव द्वारा उत्तर	१४४	१४२

	कारिका पृष्ठाङ्क	
जप और जपनीय का स्वरूप	१४५	१४२
ध्यान का स्वरूप	१४६	१४३
अजपा जप-विधि		
अन्तःकरण-चतुष्टय का चिदाकाश में लय होना		
ही पूजा है	१४७	१४३
किसी एक धारणा स्थिति ही तृप्ति है	१४८	१४५
होम का स्वरूप	१४९	१४५
याग का स्वरूप	१५०, १५१	१४६
वास्तविक स्नान का स्वरूप	१५२	१४७
बाह्य पूजा की निस्सारता (पूज्य-पूजक का अभेद)	१५३	१४७
प्राणापान स्वरूप परावस्था	१५४	१४७
जीव द्वारा परम भैरवता की प्राप्ति	१५५	१४७
श्वास-प्रश्वास स्वरूप जप की प्राणान्त में दुर्लभता	१५६	१४७
ग्रन्थ की फलश्रुति		
अध्यात्मशास्त्र की गोपनीयता	१५७	१५६
उपदेश प्रदान करने से पूर्व पात्रता-अपात्रता का विचार	१५८	१५६
अस्थिर वस्तुओं के त्याग से परमपद की प्राप्ति	१५९	१५६
प्राणों से भी श्रेष्ठ परमामृत	१६०	१५६
देवी द्वारा शंकाओं के समाधान की प्राप्ति तथा		
शिव के साथ एकीकरण	१६१-१६३	१५७
श्लोकानुक्रमणिका		१५९

परिशिष्ट

(क) शब्दानुक्रमणिका	१६३
(ख) संस्कृत टीका व हिन्दी व्याख्या में उद्धृत श्लोकानुक्रमणिका	१७५
(ग) विवृति और कौमुदीकार की कारिकाओं में पाठभेद	१८०
(घ) सहायक ग्रन्थ-सूची	१८३